REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2024

मृच्छकटिकम् नाटक के चौथे अंक का सामाजिक महत्व

डॉ. रेनू शुक्ला[1] , वीथिका दास वैराग्य[2]
[1]सहायक प्राध्यापक, संस्कृत उवं प्राच्य विभाग, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[2]शोधार्थी, संस्कृत उवं प्राच्य विभाग, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

प्रस्तावना :–

मृच्छकटिकम् नाटक चौथे अंक का महत्त्व–

संस्कृत साहित्य में शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम्नामक नाटक उनमें से एक है। इस नाटक में दस अंक है, चौथा अंक इस दस अंकों में से एक है। इस अंक का नाम मदनिका शर्विलक है। जो नाटक के सहायक पात्र नायक–नायिका के नाम पर रखा गया है। हालांकि शुद्रक प्रत्येक अंक को बहुत कुशलता से बताता है, मुझे लगता है की चौथा अंक गति कथानक चरित्र–चित्रण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। तीसरे अंक के अंत में हम देखते हैं की मैत्रीय और चारुदत्त अपने कमरे में सो रहे हैं रात में रेभिल का संगीत सुनने के बाद। उस समय शर्विलक अपनी प्यारी मदनिका को वसंतसेना से हमेशा के लिए चुराने के लिए चारूदत्त के घर आता है। चारुदत्त के गरीब होने पर भी शर्विलक ने चारूदत्त द्वारा छोड़े गए वसंतसेना के आभूषण चुरा लिए। सुबह उठने पर आभूषण ना मिलने पर चारुदत्त और मैत्रेय को यकीन हो गया कि आभूषण चोरी हो गए हैं उस समय चारूदत्त की पत्नी धुता अपना गहना चारुदत्त को देती है और कहती है कि यह गहनावसंतसेना को सौंप कर वह उसकी बदनामी से बच जाएगा। चारूदत्त के सहयोगी मैत्रेय ने बसंत सेवा की गहना भेजो यह घटना तीसरे अंक का समाप्त करती है। चौथे अंक में हम विभिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं का संग्रह देखते हैं, जो मेरे विचार से इस अंक की अन्य अंको से श्रेष्ठ बनाता है। इस चित्र में बसंतसेना के चुराए हुए आभूषणों को एक साथ शर्विलक का प्रवेश और आभूषणों के बदले में बसंत सेना द्वारा अपनी प्रेमिका मदनिका को हमेशा के लिए गुलामी से मुक्त करना,वसंतसेना के प्रेम की अभिव्यक्ति को दर्शाता है और उसका प्रेम कितना मजबूत है विदुषक का धुता के आभूषणों के साथ वसंतसेना के घर में प्रवेश, विदुषक द्वारा वसंतसेना घर का सौंदर्य वर्णन, शर्विलक का अपनी मित्र और पत्नी के प्रति कर्तव्य इस प्रकार नाटककार ने इस अंक में विभिन्न घटनाओं को एकत्रित कर इस अंक को उत्कृष्टता का दावेदार बना दिया है।

वसंतसेना के प्रेम की अभिव्यक्ति –

नायिका वसंतसेना चारुदत्त के प्रति प्रेम के अभिव्यक्ति चौथे अंक के आरंभ में हम नायिका वसंत सेना के प्रेम का सैलाब देखते हैं। नायिकावसंतसेना चारुदत्त के चित्र को ध्यान से देख रही है, उसे ध्यान से देखता देख मदनिका उससे पूछती है कि क्या तुम चारुदत्त की चित्र को देख रही हो इस नाटक में पहली बार वसंतसेना की चारूदत्त के प्रति वासना उसके वसंतसेना जैसे शद्धों से प्रकट होती है। जब वसंतसेना की मां ने खबर भेजी की राजशालकशकार चेतकी के साथ दसहजार सोने के सिक्कों के बदले में अपनी प्यार की पेशकश करने आया है, तो उसने इसे अस्वीकार कर दिया जिससे चारुदत्त के प्रति उसका प्यार और भी मजबूत हो गया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वह पैसे नहीं बल्कि व्यक्ति से आकर्षित है। चारुदत्त के मित्र ने वसंतसेना के

खोए हुए गहनों के बदले अपनी पत्नी के गहने मैत्रेय के भेज दिए और उससे यह कहने के लिए कहा कि उसके गहने जुए में हार गए हैं। जैसे ही विदूषक इस जुए का जिक्र करता है वसंतसेना चारुदत्त की चातुर्य की प्रशंसा करती है–

गुणप्रवलां विनयप्रषाखं विश्रम्भमूलं महनीयपुश्पम्।
तां साधुवृक्षं स्वगुणैः फलाढ्यं सुहृद्विहङगा सुखमाश्रयन्ति।। (32)

दूसरे शब्दों में सज्जन वृक्ष के पक्षी सुख में रहते हैं, जिनका गुण उसका पल्लव है, विनय उसकी शाखा है, विश्वास उसकी जड़ है, महिमा उसका फूल है, और दान उसका फल है, इस प्रकार नाटककार ने वसंतसेना की चारूदत्त के प्रति प्रेम कहानी का बहुत ही कुशलता से चित्रण किया है।

मदनिकाभार्विलकयोंः प्रेमकथा–

यद्यपि मदनिका और शविलक के इस नाटक के सहायक नायक और नायिका हैं। शुद्रक चतुर्थोंके ने बड़ी कुशलता से उनकी प्रेम कहानी को सामने लाया है।और काव्य सौंदर्य को बढ़ाया है। चौथे अंक की शुरुआत में ही हम शर्विलक को तीसरे अंक में चुराए गए गहनों के साथ मदनिका से मिलने आते देखते हैं, जो कहानी की शैली से स्पष्ट है। उसने कहा–

दत्त्वा निषायां वचनीयदोशं निद्रा च जित्त्वा नृपतेश्च रक्षान्।
स एश सुर्योदयमन्दरश्मिः क्षपाक्षपाच्चन्द्र इवास्मि जातः।। इति (1)

अर्थात मेने रात की निंदा करके निद्रा को जीत लिया है, परंतु राजा के पहरूओं को धोखा दिया है। और रात के अंत में मैं थोड़ी किरणों से चंद्रमा के समान अशुद्ध हो गया हूं। शर्विलक मदनिका से मिलता है और दोनों की बीच बातचीत के दौरान वह बताता है कि शर्विलक ने उसे पाने के लिए चारुदत्त की घर में चोरी की थी ।

दारिद्रेणाभिभुतेन त्वत्स्नेहानुगतेन च।
अद्यः रात्रौ मया भीरुः! त्वदर्थे साहसं कृतम।। (5)

यानी डरपोक लड़की मै गरीबी से त्रस्त हूं। लेकिन मैं तुमसे स्नेह करके मैने आज रात तुम्हारे लिए एक बहादुरी का काम किया है। यह सुनकर मदनिका घबरा गई तो शर्विलक ने उसे बताया।

नो मुश्णाम्यबलां विभुशणवर्त्तीं फुल्लामिवाहं लतां
विप्रस्वं न हरामि काञचनमथो यज्ञार्थमभ्युद्धृतम्।।
धान्यूत्सङगतंहरामि न तथा वालं धनार्थी क्वचित्।
कार्य्याकार्य्यविचारिणी मम मतिश्चौर्य्येऽपि नित्यं स्थिता।। इति।। (6)

अर्थात मैं कभी धन के लिए खिले हुए फूल के समान सुशोभित कन्या की चोरी नहीं करता,न ही मैं किसी ब्राह्मण का धन, सोने का धन, या यज्ञोपवीत धन और दाई का गर्भ से बच्चे को चुराता हूं। क्योंकि मेरी बुद्धि और कर्तव्य तथा कर्तव्य चोरी के विषय में कर्तव्यनिष्ठ है। इसके बाद शर्विलक मदनिका से वसंतसेना को गहने देकर अपनी रिहाई के लिए अनुरोध करने के लिए कहती है। जैसे ही मदनिका गहने देखती है, उसे पता चलता है। कि यह गहने वसंतसेना की हैं। तब उसे मालूम हुआ की शर्विलक ने चारूदत्त के घर में चोरी की है। यह जानने पर मदनिका बीमार पड़ जाती है, और शर्विलक से पूछती है कि क्या चारुदत्त सुरक्षित है। बाहरी व्यक्ति के प्रति इस आकर्षक देखकर शर्विलक क्रोधित हो गई, और महिला चरित्र के बारे में बात करने लगी।

इह सर्वस्वफलिनः कुलपुत्रमहाद्रुमाः ।
निस्फलत्वमलं यान्ति वेष्याविहगतेक्षिताः ।। (10)
अयञ्च सुरतज्वालः कामग्नि प्रणयेन्धनः।
नराणां यत्रहूयन्ते यौवनानिधनानि च।। (11)

अर्थात इस संसार में अच्छे जन्मे हुए युवा महान वृक्ष है, सभी धन उसके फल हैं बड़े–बड़े फलहीन हो गये क्योंकि दरबारी पक्षियों के झुंड ने फलों को खा लिया। यह काम आग है, जुनून इसका ईंधन है, और संभोग इसकी लौ है। लोग इसमें अपनी सारी दौलत और जवानी कुर्बान कर देते हैं। उनकी तुलना धन और वह धन और स्त्री की तुलना सांप की गति से करता है। उन्होने कहा –

अपण्डितास्ते पुरूशा मता मे ये स्त्रीयु च श्रीशुचविश्वसन्ति।
श्रियो हि कुर्वन्ति तथैव नार्यो भुजडग़कन्यापरिसर्पणानि।। (12)

अर्थात जो लोग स्त्री और धन में विश्वास करते है, उन्हें मैं हर दृष्टि से मूर्ख मानता हूं क्योंकि स्त्री और धन सांप की तरह तेजी से चलते हैं। उसकी इन सब बातों से पता चलताहै कि वह मदनिका के प्रति कितना आकर्षित था।

तब मदनिका को शर्विलक से कहा ''वसंतसेना से कहो कि चारुदत्त ने मुझे यह आभूषण सौपने के लिए भेजा है, अर्थात इन आभूषणों को स्वीकार कर लें'' शर्विलकमदनिका की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करता है–

स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।
पुरूशाणान्तु पाण्डित्यं भाास्तैरेवोपदिष्यते।। (19)

अर्थात ये सभी महिलाएं स्वाभाविक रूप से अनुभवी होती है लेकिन पुरुषों का अनुभव शास्त्र सम्मत होते हैं। मुद्राराक्षसम् नाटक के प्रथमाडकमें सुत्रधार के शुब्द भी नारी की बुद्धिमता की प्रषंसा करते है। सुत्रणार ने नटी की गुण्वत्ता की प्रषंसा की –

गुणवत्युपायनिलये स्थितिहेतोः साधिके त्रिवर्गस्य।
मद्भ्वननीतिविद्ये कार्याकार्ये द्रुतमुपेहि।।

अर्थात तुम पुण्यत्मा हो, तुम्हारे मन में अनेक मार्ग आते हैं, मेरा धर्म, अर्थ और काम इन तीनों में ही संचित है, मेरे घर की रक्षा के लिए तुम ही मेरी नैतिकता हो, मुझे सलाह मिलती है कि मुझे क्या करना चाहिए, लेकिन एक बार यहां आकर देखा। तब शर्विलकवसंतसेना को आभूषण देते हुए कहता है, कि ये आभूषण चारुदत्त नेप्रत्यर्पण के लिए उसके पास भेज हैं। दूसरी ओर वसंतसेना शर्विलक को बताती है कि चारूदत्त ने उससे कहा था कि जो भी ये आभूषण देगा वह मदनिका को सौंप देगा। इस कारण वसंतसेना ने छिपकर मदनिका और शर्विलक की सारी बातें सुनकर वसंतसेना की दया से आज मदनिका के वधू पद ग्रहण किया और शर्विलक के घर के लिए प्रस्थान किया। तभी शर्विलक को पता चला कि उसकी सखी आर्यकको आज राजा पालक ने कैद कर लिया है। यह बात पता चलते ही वह कार से उतरा और चेत से कहा की पत्नी और बच्चे बहुत प्यारे हैं, इसलिए मेरी पत्नी को रेभिल के घर ले चलो उनके इस रूप के प्रयोग से यह स्पष्ट है कि वे अपने कर्तव्य पालन के प्रति कृतसंकल्पथे।शर्विलक का मित्र आर्यक बाद में राजा बना। मुझे लगता है कि इस अंक का नाटक में अन्य अंको से विशेष स्थान है। क्योंकि शर्विलक ने उसकी रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वसंतसेना और विदूषक के बीच संवाद तथा विदूषक द्वारा बसंतसेना के घर की सुंदरता का वर्णन –

चारुदत्त अपने मैत्रेय को बसंतसेना के पास गहने लौटाने के लिए भेजता है, और उसके गहने लौटाने से अगले अंक में बसंतसेना के चारूदत्त के घर जाने के संदेश की पुष्टि होती है। जो नाटक के बाद की घटनाओं में एक प्रमुख भूमिका निभाता हैं। विदूषक का किरदार हसी का पात्र है, लेकिन नाटककार ने इसमें विदूषक के किरदार को एक अलग अंदाज में पेश किया है। नाटककार ने शूद्रक विदूषक के शब्दों के माध्यम से बसंतसेना के घर की सुंदरता का वर्णन किया है, जिसके माध्यम से उसके मन धैर्य और मानवता की सुंदरता को पहचाना जा सकता है।मैत्रेय के प्रवेश का संदेश सुनकर बसंत सेना बहुत ही प्रसन्न हुए जिसे उनसे अपने शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया उसने कहा –

अहोरमणीयता अद्यः विवसस्य है औह आज का दिन बहुत ही सुंदर है, उनके कथन से अपान प्रेमास्पद चारुदत्त के साथ मिलन स्वाभाविक रूप से सुखद है, वास्तव में उनके इन कथनों से यह ज्ञात होता है कि इसमें कई महत्वपूर्ण घटनाएं एकत्रित हुई है। अध्याय जो इस नाटक में बहुत महत्वपूर्ण है उन्होंने वैश्यालय में प्रवेश करते हुए कहा वाह–वाह राक्षस आज रावण तपस्या करके प्राप्त पुष्पयुक्त विमान में यात्रा करता था। और मैं एक छोटा सा ब्राह्मण बिना कोई कष्ट सहे एक मनहूस नरनारी के साथ चला गया हूं । उनके इस बयान से साफ है कि उन्होंने यह यात्रा बेहद सुखद और सुखद लगी।

उन्होंने बसंत सेना के महल से संबंधित आठ महलों का बहुत कुशलता से वर्णन किया है –

प्रथम मंजिल– यह महल चंद्रमा, शंख और मृणाल के समान गहरे रंग का है,चूकि यहां कोई सामाजिक अव्यवस्था नहीं है, इसलिए द्वारपाल क्षेत्रीय ब्राह्मण की तरह सुख से सोते हैं।

दूसरी मंजिल –यह दूसरा महल उन सभी प्राणियों का निवास स्थान था जिन्हें बसंतसेना अपनी सुरक्षा के लिए रखती थी वह इन सभी प्राणियों का बहुत ध्यान से ख्याल रखता था।

तीसरी मंजिल –तीसरे महल में आप गनीकला आने वाले लोगों के मनोरंजन की अच्छी व्यवस्था देख सकते हैं इस तीसरे महल से ज्ञात होता है कि गनीकला में जुआ–सट्टा खेला जाता था।

चौथा महल – चौथा महल में देखा जा सकता है कि वेश्यालय किसी दूसरे आदमी से मिलकर कितने क्रोधित होती है विभिन्न संगीत वाद्य यंत्रों की उपस्थिति के माध्यम से उसके स्वरूप का वर्णन उजागर होता है।

पंचम महल–पंचम महल रंधनषाला यहां सुंदर लड़के खाना बनाने में लगे हुए हैं वहीं दूसरी ओर तवायफें और तवायफें स्वर्ग की अप्सराओं की तरह खाना बनाने में लगी हुई है।

शष्ठा महल – शष्ठा महल विभिन्न रत्नो से सजाया गया है यहां देखा जा सकता है कि कैसे दरबार में आने वाले लोगों को तवायफें बड़ी सावधानी से प्याले से शराब खिला रही है। आप देख सकते हैं कि गोनिकला में आने वाले लोगों कितने क्रुर होते हैं।

सातवें महल –सातवें महल में इस बात का वर्णन है कि किस प्रकार मयना, कोकिल, हंस आदि विभिन्न पक्षियों की देखभाल करके गणिकालय को स्वर्ग जैसे बनाया गया था।

आठवां महल –आठवां महल वह है जहां बसंतसेना रहती है। बसंतसेना उद्यान शेफालिका मालती, नावमल्लिक आदि फूलों से भरा हुआ है, जो नंदनवन के समान सुंदर है बसंतसेना का महल देखकर विदूषक आश्चर्य चकित हो गया और बोला कुबेर का यह भाग विशेष है विदूषक शुरू में बसंतसेना के भाई की सुंदरता से आश्चर्यचकित होता है लेकिन उसके प्रति समाज के दृष्टिकोंण का वर्णन करता है।

हालांकि उनके सुंदरता दिखाने में शानदार है लेकिन उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि उन्हें समाज में त्याग दिया गया है।

मृच्छकटिकम् नाटक के चतुर्थ अंक की श्रेष्ठता का निर्णय –

मृच्छकटिकम् संस्कृत साहित्य मे शूद्रक द्वारा लिखित नाटकों में एक है, इस दसअंकीय नाटक के चौथे अंक का नाम मदनिका शर्विलक है, इस अंक में मुख्य रूप से बसंतसेना की दासी मदनिका और शर्विलक की प्रेम कहानी का वर्णन है यद्यपि भी यहां मदनिका और शर्विलककी प्रेम कहानी का वर्णन किया गया है, नाटककार शूद्रक ने इस अंक में नाटक की कई महत्वपूर्ण कहानीयों का बहुत ही कुशलता से वर्णन किया है, जो चौथे अंकों नाटक में भी अंक अन्य अंको से विशेष रूप से महत्वपूर्ण बनता है, इस अंक में मदनिका औ

बसंतसेना की बातचीत से पहली बार बसंतसेना का प्रेम प्रकट होता है, जो नाटक में बहुत महत्वपूर्ण है मदनिका और शर्विलककी प्रेम कहानी थी यहां बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन जब शर्विलक ने मदनिका को गुलामी से मुक्त करने के लिए चारुदत्त के घर में चोरी की तो उसने अपना विवेक नहीं छोड़ा उसने बिना किसी को नुकसान पहुंचा बहुत सावधानी से चोरी की, हम यह भी देखते हैं कि वह अपनी पत्नी के प्रति अपने कर्तव्य में कैसे दृढ़ थे जब उन्होंने बहु प्रतीक्षित मदनिका से मुलाकात की तो उन्होंने खतर में अपने दोस्त की, रक्षा की उन्होंने इस नाटक में विदूषक को अलग अंदाज में पेश किया है कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पूरे नाटक में हर किरदार को इस तरह पेश किया गया है कि हर किरदार के जरिए हम किसी के प्रति प्यार, कर्तव्य, जिम्मेदारी, धैर्य, मानवता जैसी कई बातें सीख सकते हैं साथ ही नाटक के स्कोर से संबंध स्थापित करने में भी इस एन को योगदान निर्विवाद है। सभी पहलुओं को देखते हुए यह कहा जा सकता है की चौथी अंक दसअंकों में से श्रेष्ठ है।

संदर्भ सूची –

- मृच्छकटिकम
  डॉ. उदयचंन्द्र वन्दोपाध्याय, डॉ. अनीता वन्दोपाध्याय संस्कृत बुक डिपो कलकत्ता–700006
- मृच्छकटिकम
  श्री अविनाष चंन्द्र दे, श्री शुभेन्दु कुमार सिद्धान्तसंस्कृत पुस्तक भण्डार कलकत्ता–700006
- मुद्राराक्षसम्
  श्री श्री सीतानाथ आचार्य, श्री देवकुमार दास
  सदेश, कोलकाता–700006

डॉ. रेनू शुक्ला
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत उवं प्राच्य विभाग, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)